श्रीमद्भगवद्गीता

निष्काम कर्मयोग

By:- Dr. Sushma Punj
Lecturer in Sanskrit
PGGCG- Sector 11
Chandigarh

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ 40 ॥

अनुवाद—इस निष्काम कर्मयोग (योग-बुद्धि, कर्तव्य पालन) का आचरण करने से मूल अथवा फल का नाश नहीं होता अर्थात् वह फल तो मिलता ही है। इसके पालने से विपरीत रूप दोष या विघ्न भी पैदा नहीं होता। इस कर्मयोग के थोड़े-से अंश का भी सेवन किया जाए, तो वह भी महान् भय (और विपत्ति) से बचा देता है।

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्॥ 41॥

अनुवाद—हे कुरुनन्दन! कर्मयोग के इस मार्ग में 'व्यवसामित्मिका बुद्धि' तो एक ही है। अव्यवसायी लोगों की बुद्धियाँ एक न होकर अनेक शाखाओं में बँटी होती हैं और अनन्त होती हैं।

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥ 42 ॥

अनुवाद—हे पार्थ! अज्ञानी लोग वेद का नाम लेकर वेदवाद अर्थात् कर्मकाण्ड में उलझे रहते हैं और पुष्प जैसी मधुर लुभावनी वाणी बोल-बोलकर यह कहते हैं कि जो हम कह रहे हैं वही मार्ग सत्य है, दूसरा नहीं।

कामात्मानः स्वर्गपरां जन्म-कर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेष-बहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति॥ 43॥

अनुवाद—(वेद का नाम लेकर उसके वाद-विवाद में, कर्मकाण्ड में फँसे रहने वाले अज्ञानी लोग) कामनाओं से आसक्त होकर, स्वर्ग की प्राप्ति के इच्छुक होकर, जन्म और कर्मफल देने वाली, भोग और ऐश्वर्य देने वाले (यज्ञ-याग आदि की) अनेक क्रिया-कलापों, चित्र-विचित्र अनुष्ठानों से भरी हुई लच्छेदार वाणी बोलते हैं।

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयाऽपहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ 44 ॥

अनुवाद—उस लच्छेदार (मधुर लुभाने वाली) वाणी से जिनका चित्त अपहरण कर लिया जाता है, उन भोग और ऐश्वर्य में आसक्त लोगों की बुद्धि समाधि में (कर्तव्यपालन में) व्यवसायात्मक नहीं होती, स्थिर नहीं हो पाती।